Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 10, Issue 02, January 2021
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

''वर्तमान वैश्विक परिवेश में बौद्ध धर्म की भूमिका''

डॉ किरण आठिया
सहायक प्राध्यापक , इतिहास विभाग , एकलव्य यूनिवर्सिटी दमोह

डॉ कृपाल सिंह आठिया

प्राथमिक शिक्षक ,शासकीय प्राथमिक शाला खिरिया

सारांशः— वर्तमान में विश्व पटल पर जो घटनायें घटित हो रही हैं । उसमें हिंसा उन्माद और उनसे उपजने वाली घृणा, अशांति और द्वेष का सर्वत्र बोलबाला है । इसके कारण ना केवल अस्थिरता बढ़ रही है बल्कि विकास की गति भी धीमी हो रही है । वर्तमान में हम वैश्विक स्तर पर भयानक क्षणों में जी रहे हैं ।जहॉ वैश्विक महामारी कोविड–19 से हम सभी जूझ रहे हैं और कोरोनाकाल की चुनौतियों का भी डटकर सामना कर रहे हैं । ऐसे माहौल में रहकर हमें स्वयं को स्वस्थ्य और संतुलित बनाये रखना होगा । ऐसे में हम यदि प्राचीन परंपराओं धर्म, शिक्षा (देशना) और विचारों की ओर नजर डालें तो हमारे सम्मुख बौद्ध धर्म आता है यह धर्म भारत की श्रवण परंपरा से निकला ज्ञान धर्म और दर्शन है । बुद्ध का मार्ग वर्तमान में बिल्कुल सटीक है ।

शब्दकोशः— वैश्विक परिवेश बौद्ध धर्म श्रवण परंपरा।

प्रस्तावनाः-
गौतम बुद्ध के विचार ऐसे रत्नों की भांति उपस्थित होते हैं जिनकी प्रकाश किरणों से हमारी बुद्धि भ्रम का अंधकार छट जाता है । हम इन बुराईयों और विकारों से अपने देश और विश्व को स्वस्थ्य और सुरक्षित रख सकते हैं । गौतम बुद्ध के विचार और ज्ञान दर्शन मानव कल्याण के लिये ''मील का पत्थर'' हैं, क्योंकि बुद्ध ने अहिंसावादो समाज की रचना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । उनकी शिक्षा (देशना) ने जनता के प्रति आत्मविश्वास जगाया।

बुद्ध ने कहा :—घृणा कभी समाप्त नहीं होती अपितु केवल प्यार से घृणा मिटती है । उनका धर्म मैत्री, करूणा, दया और सहिष्णुता का है । आज 2500 वर्ष स अधिक का समय बीत चुका है । पर बुद्ध का धम्म (धर्म) आज भी हमारी कसौटी पर खरा उतरता है ।

सवाल है धर्म क्या ?''कुदरत के कानून को धर्म कहते हैं'' कुदरत का वह नियम जो हम सब पर लागू होता है ।
अणु अणु पर उसकी हुकूमत चलती है ।सभी उस कानून के अधीन है।जा सर्वव्यापी है । सार्वभौमिक है।वही धर्म है ।

जैंसेः— सूरज सबका है एक जैसी उष्मा देता है,
हवा सबको एक जैसी शीतलता प्रदान करती है ।
नदी और बादल सभी को एक जैसा ही अपना जल देते हैं । वैसा ही धर्म सबका है ।

धर्मः- प्रकृति हो या व्यक्ति उसके स्वाभाविक गण और उसका कर्तव्य ही धर्म है ।''बुद्ध का युग गहन विचार मंथन का युग है । वर्तमान परिवेश में बौद्ध धर्म अधिक प्रासंगिक है । यह मार्ग पाखंड अंधविश्वास से दूर रहने का मार्ग दिखाता है । बुद्ध का मार्ग विशुद्ध नैतिकता, बौद्धिकता, शमथ (शांति) और विपश्यना (आत्मनिरीक्षण) का है। बौद्ध धर्म दुनिया के लगभग सभी देशों में फैला और फला फूला विभिन्न रूपों में लंका, वर्मा, तिब्बत, चीन, मंगोलिया, जापान, थाईलैंड, मलेशिया, म्यांमार, वियतनाम आदि में प्रभावशील धर्म के रूप में विकसित हुआ है । लेकिन कहीं भी एक बूंद रक्तपात नहीं हुआ, यह भी धर्म का अनोखापन है । धर्म के सिद्धांतों ने महान सम्राट अशोक जैंसे तलवारबाज का हृदय परिवर्तन कर दिया । महान सम्राट अशोक ने युद्ध और संघर्ष के मार्ग को सर्वदा के लिये त्याग कर अहिंसा और शांति को अपनाया । डाकू अंगुलिमान जैसे नरसंहारी को मानव बना दिया । आज पूरी दुनिया आतंकवाद, अलगाववाद से त्रस्त है और इस ज्वलंत समस्या का समाधान केवल बुद्ध के मार्ग पर चलने से ही संभव हो सकता है । वर्तमान वैश्विक स्तर पर कराहती हुई मानवता और विनाश की कगार पर खड़े हुये विश्व के लिये बौद्ध का मार्ग ही शरण स्थली है ।

यह मार्ग यथार्थ के सही रूप को पहचानकर अपनी पूरी मानवीय क्षमताओं को विकसित करने में सहायता करता है । आज मानवाधिकारों की रक्षा करना मनुष्यता को बचाना और मानव परिवेश को सुरक्षित और संतुलित रखना कठिन होता जा रहा है । मानव के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है ? जहॉ गौतम बुद्ध मानवतावाद के प्रबल व्याख्याकार थे । वह मनुष्य के उत्कर्ष के लिये निरंतर सोचा करते थे । आज वर्तमान में जहॉ हिंसा, लोभ और अपराध सर उठा रहे हैं । ऐसे में बुद्ध के वचन हमें मानव अधिकारों की रक्षा में श्रेयस्कर मार्ग के अवलंब क साथ हमारे सामने आते हैं । इनसे श्रेष्ठ वचन और विचार कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि ये वैज्ञानिक और पंथ निरपेक्ष (सेक्यूलर) हैं । हम आशा करते हैं कि बुद्ध के इन संदेशों से परिपूरित जीवन शैली में ही मानवता का भविष्य सुरक्षित हो सकेगा । इसी में जीवन की सभावना निहित है । गौतम बुद्ध का संदेश ऐतिहासिक दृष्टि से सनातन है उतना ही वर्तमान में प्रासंगिक है, अपितु इसे कल की बात न कहकर आवश्यकता आज अधिक है ।

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 10, Issue 02, January 2021
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

बौद्ध धर्म का सार और सार्थकता अपने में कितनी व्यापकता और सूक्ष्मता रखता है यह किसी और मार्ग में नहीं मिलती । वर्तमान परिवेश के माहौल को देखते हुऐ हमें विपरीत परिस्थिति में भी असीम धैर्य और अद्वितीय साहस से बाहर निकलना होगा और कई तरह की चुनौतियों का डटकर सामना करना होगा । हम वैज्ञानिक तरीके से सोच कर आगे बढ़कर मुश्किलों को पार कर सकते हैं ।

आईंसटाईन के अनुसार :- तथागत बुद्ध ने सर्वप्रथम विश्व में वैज्ञानिक पद्धति से विचार किया । बौद्ध धर्म वैज्ञानिक धर्म है । गौतम बुद्ध ''महाभिषेक'' और ''महाविज्ञान'' पुरूष थे । बुद्ध का पंचशील, आष्टांगिक मार्ग, एक ऐसा खजाना है जिससे आदमी करूणा, दया, मैत्रीशील गुणो से युक्त होकर आदर्श जीवन जी सकता है । गौतम बुद्ध का आखिरी महामंत्र था ''अप्पो दीयो भवः '' अपना दीपक स्वयं बनो, दीपक बनकर खुद को प्रकाशित करना होगा और दूसरों को भी उजाला (रास्ता) दिखाना होगा ।

इस निराशाजनक वातावरण के युग में शांति, भाईचारा, प्रेम एवं सहिष्णुता का संदेश देना होगा और ऐसे नियमों धर्मों को पहचानना होगा जो पूरी क्षमताओं के साथ विकसित करने में हमारा वर्तमान और बेहतर बनाने में सहायता करता है ।

हमें प्रकृति से जुड़ना होगा, आध्यात्मिकता की ओर बढ़ना होगा जिससे हमारी अंदर की छिपी क्षमताओं और प्रतिभाओं को समझना होगा।यही हमें परोपकारी सेवाभावी और करूणामयी बनाती है ।वर्तमान में वैश्विक महामारी ने कोरोना काल में हमारे सामने स्वास्थ्य संबंधी बड़ी चुनौती है । हम बौद्ध धर्म की एक विधा ''विपश्यना'' से बहुत हद तक पार पा सकते हैं । हमारी सोच नकारात्मक से सकारात्मक की ओर बढ़ेगी और अध्यात्मिक योग ध्यान, साधना से ही इस कोरोना काल की चुनौती इस विधा को अपनाकर पूरी कर सकते हैं । अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते ह। और इस वैश्विक संकट की घड़ी को अवसर में बदल भो सकते हैं । हम सभी पृथ्वी, अंतरिक्ष, जल, वनस्पति और समाज के लिये मंगलकामना भी कर रहे हैं । सब मानव सुखी हों निरोगी रहे ऐसे कल्याण की ओर अग्रसर हो ऐसी कामना हम हमेशा से करते आ रहे हैं ।

हम मानव मात्र में ही नहीं जीव जंतुओं के प्रति भी करूणा रखें, दया रखें । मानव धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध के सरल नियमों और मोक्ष के सरल साधनों के कारण समाज का विशाल वर्ग इस धर्म के प्रभाव में आ गया था और खूब फूला फला ।

गौतम बुद्ध ने सामाजिक भेदभाव मिटाने का प्रयास किया है, जाति पाति, छुआछूत की अवधारणा को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । गौतम बुद्ध ने कहा था कि ''लोगों का मूल्यांकन जन्म के आधार पर नहीं बल्कि कर्म के आधार पर होना चाहिये तभी मानव का विकास हो सकता है'' । बुद्ध ने प्रज्ञा के प्रखर आलोक से अज्ञान और अंधविश्वास के कोहरे को छिन्न भिन्न कर दिया । बुद्ध का आंदोलन सामाजिक न्याय के आधार पर था अगर भारत को पुनः सोने की चिड़िया बनाना है तो बुद्ध की शिक्षाओं और मार्ग को संपूर्ण भारत में पहुँचाना होगा और अपने व्यवहारिक तौर पर लाना होगा, तभी विश्व का कल्याण होगा ।

।। भवतु सब्व मगलम ।।

संदर्भ:-

01- महात्मा बुद्ध के समकालीन लोग

02- मीर्चा ईटु, दर्शन और धर्म का इतिहास, बुखारेस्ट, कल की रोमानिया का प्रकाशन संस्था, दो हज़ार चार, एक सौ इक्यासी का पृष्ठ। (ISBN 973-582-971-1)

03.आनन्द केंटिश कुमारस्वामी, हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म, नई यॉर्क, गोल्डन एलिक्सिर प्रेस, दो हज़ार ग्यारह, चौहत्तर का पृष्ठ। (ISBN 978-0-9843082-3-1)

04. Department of Census and Statistics,The Census of Population and Housing of Sri Lanka-2011 Archived 2017-10-17 at the Wayback Machine

05."बौद्ध धर्म और श्रीलंकन संस्कृती". मूल से 20 दिसंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 दिसंबर 2016.